Date:23/01/2026

बूंद से नदी (Drop to River)

आज का दिन कोई साधारण दिन नहीं है। आज वसंत पंचमी है—प्रकृति के नए जन्म का उत्सव। पर एक अभ्यासी के लिए, आज हमारे 'आदि गुरु', महात्मा श्री रामचंद्र जी महाराज (फतेहगढ़) का जन्मदिवस है।

वसंत का मतलब है पुराने पत्तों का गिरना और नई कोंपलों का आना। ठीक वैसे ही, गुरु हमारे जीवन में तब आते हैं जब हमारी पुरानी आदतें और 'अहं' (ego) गिरने को तैयार होता है। मैं खुद को देखता हूँ तो लगता है, मैं एक नन्हीं सी बूंद हूँ, जो अपनी ही इच्छाओं के घेरे में कैद थी। पर आज इस पावन दिन पर, गुरु की कृपा की वसंती हवा ने मुझे एक नई दिशा दी है।

धीरे-धीरे साधना, सत्संग में बैठते समय जब समय और स्थान का बोध नहीं होता, तो मुझे इस बूंद में भी गहराई का पता चलने लगता है। कभी-कभी लगता है इस बूंद के अंदर ही पूरा सागर है।

कबीर साहब ने कितना सुंदर कहा है: **"हेरत हेरत हे सखी, रहा कबीर हिराइ | बूंद समानी समंद में, सो कत हेरी जाइ ||"**

कबीर कहते हैं कि खोजते-खोजते कबीर खुद ही खो गया। जब बूंद सागर में समा गई, तो उसे अब कहाँ ढूंढोगे? पर इस खो जाने से पहले एक अनुशासन की जरूरत है, एक तैयारी की जरूरत है। इस बूंद के सागर तक के सफर में '10 नियम' (10 Commandments) काफी सुंदरता से रास्ता दिखाने का काम करते हैं।

साधना का अनुशासन (नियम 1 और 2)

"लाला जी महाराज ने हमेशा सादगी और अनुशासन पर जोर दिया। उनके बताए रास्ते पर पहला और दूसरा नियम हमारी बुनियाद है—सूरज निकलने से पहले उस पावन घड़ी में जागना। जब हम एक निश्चित समय और स्थान पर, प्रेम से भरे दिल के साथ बैठते हैं, तभी वह 'अंदरूनी वसंत' खिलती है। बूंद जब तक बिखरी हुई है, तब तक वह कमजोर है। जब वह एक जगह बैठकर प्रार्थना करती है, तो उसे अपनी गहराई का पता चलता है। सत्संग और पूजा सिर्फ एक क्रिया नहीं, बूंद का सागर से मिलने का पहला कदम है।"

लक्ष्य और सरलता (नियम 3 और 4)

"सफर लंबा है, इसलिए तीसरा नियम सबसे जरूरी है—लक्ष्य को साफ रखो। हमारा लक्ष्य है 'पूर्ण एकाकारता' (Complete Oneness)—ईश्वर के साथ पूर्ण एकाकारता। लाला जी खुद सरलता की मूरत थे। उनका चौथा नियम कहता है—प्रकृति की तरह सरल बनो। कबीर दास जी ने कहा था:

'ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग। तेरा प्रीतम तुझ में है, जाग सके तो जाग॥'

जैसे तिल में तेल छिपा है, वैसे ही बूंद में सागर छिपा है। हमें बस सरल होना है ताकि गुरु की शक्ति हम में बह सके। जितनी ज्यादा सरलता, उतनी ही तेज प्रगति।"

माया और गुरु कृपा (नियम 5 और 7)

"लेकिन रास्ता आसान नहीं। माया का घेरा बहुत मजबूत है। भगवद्गीता में प्रभु कहते हैं: **'दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया...'** इस दुष्कर माया को पार करने का तरीका नियम 5 और 7 में है। जब

तकलीफ आए, तो उसे 'ईश्वरीय आशीर्वाद' (Divine Blessing) समझो। जब कोई बुरा करे, तो बदला लेने के बजाय उसे 'दिव्य उपहार' (Heavenly Gift) मानो।

कबीर साहब कहते हैं—'दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय'। पर एक अभ्यासी दुख में भी गुरु का हाथ पकड़े रहता है। नदी जब टकराती है पत्थरों से, तो वह रुकती नहीं, बल्कि उन्हें तराश कर गोल कर देती है। हमें भी अपनी मुश्किलों को अपना सहयोगी बनाना है।"

सेवा: बूंद का नदी बनना (नियम 6, 8 और 9)

मास्टर ने कहा है—'बूंद से नदी बनो।' जब हम नियम 6 और 8 को जीवन में उतारते हैं, तो हर इंसान भाई लगने लगता है। जो मिलता है, उसे प्रसाद समझकर ग्रहण करते हैं। अब मेरी भक्ति सिर्फ मेरे लिए नहीं रही, वह 'सेवा की धार' बन गई है। नवां नियम कहता है—अपने जीवन को ऐसा ढालो कि दूसरों में प्रेम जागे। नदी यह नहीं पूछती कि घाट किसका है, वह नाली और गटर के भेद को नहीं मानती, वह बस बहकर सबको पवित्र करती है। सेवा ही वह डोर है जो बूंद को सागर की अनंतता से जोड़ती है।

समर्पण (नियम 10)

अंत में, रात को सोते समय दसवां नियम—अपनी भूलों के लिए क्षमा माँगना और खुद को गुरु की गोद में सौंप देना। वसंत पंचमी का यह उत्सव तभी सार्थक है जब हमारी बूंद सागर में समा जाए। मेरे मास्टर ने मुझे 'चेला' बनाने नहीं, बल्कि 'मास्टर' बनाने भेजा है—ताकि मैं अपनी दिव्यता को पहचानूँ।

अब यह बूंद 'समंद' (सागर) में समा गई है... अब इसे कोई कहाँ ढूंढे? महात्मा श्री रामचंद्र जी महाराज के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। सबको वसंत पंचमी की शुभकामनाएं।

Appendix:

हेरत हेरत हे सखी, रहा कबीर हिराइ | बूंद समानी समंद में, सो कत हेरी जाइ |

हेरत हेरत (Herat Herat): खोजते-खोजते, ढूंढते-ढूंढते.

हे (He): अरे (संबोधन के लिए).

सखी (Sakhi): सहेली, मित्र (यहाँ मित्र को संबोधित कर रहे हैं).

रहा (Raha): हो गया, रह गया.

कबीर (Kabir): स्वयं कबीर (या जीवात्मा/व्यक्ति).

हिराइ (Hirai): खो गया, विलीन हो गया.

बूँद (Boond): पानी की एक छोटी बूँद (आत्मा का प्रतीक).

समानी (Samani): समा गई, मिल गई, विलीन हो गई.

समंद (Samand): समुद्र, सागर (परमात्मा या परम सत्ता का प्रतीक).

सो (So): तो, वह.

कत (Kat): कहाँ, कैसे.

हेरी जाइ (Herी Jaai): खोजी जा सकती है, ढूंढा जा सकता है (नकारात्मक अर्थ में कि अब असंभव है).

Mukesh Marodia